सेतु-कार्यक्रम

हिंदी

कक्षा 8 के लिए

समय-अवधि—6 सप्ताह के लिए

सेतु-कार्यक्रम

हिंदी

समय-अवधि—6 सप्ताह के लिए

कक्षा 8

हिंदी
कक्षा 8 के लिए सेतु-कार्यक्रम

प्रथम संस्करण
मार्च 2025 चैत्र 1947

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2025

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनकी, मशीनी, फ़ोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फ़ीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *एम.वी. श्रीनिवासन*

मुख्य संपादक : *बिज्ञान सुतार*

मुख्य व्यापार प्रबंधक : *अमिताभ कुमार*

सहायक संपादक : *मीनाक्षी*

आवरण एवं लेआउट
फात्मा नासिर

निदेशक की कलम से...

प्रिय विद्यार्थियो एवं शिक्षको,

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् कक्षा 8 (मध्य स्तर की अंतिम कक्षा) में प्रवेश लेने वाले सभी विद्यार्थियों का हार्दिक अभिनंदन करती है। यह कक्षा एक उल्लेखनीय चरण है जहाँ हम अपने शैक्षिक व्यवहारों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 और विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 के परिवर्तनकारी दृष्टिकोण के साथ संरेखित करते हैं।

हमारी प्रतिबद्धता ऐसा अधिगम अनुभव प्रदान करना है जो आनंदमयी, नवोन्मेषी और भारतीय संस्कारों से गहन रूप से संपृक्त हो। नए पाठ्यक्रम और शिक्षण-अधिगम सामग्री की रचना इस प्रकार की गई है जो अनुभवजन्य, खोज और तार्किकता पर आधारित हो ताकि विद्यार्थियों की शिक्षा-यात्रा समृद्ध बन सके। हमारे विद्यार्थी पुराने पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्यपुस्तक पढ़कर आए हैं जो नए दृष्टिकोण से भिन्न है। इस अंतर को समझते हुए और एक सुचारू तथा प्रभावी परिवर्तन सुनिश्चित करने के लिए हमने हिंदी सहित सभी विषय क्षेत्रों में एक व्यापक छह सप्ताह का सेतु कार्यक्रम निर्मित किया है।

यह सेतु कार्यक्रम उन विद्यार्थियों हेतु नवाचारी शिक्षणशास्त्रीय पद्धतियों और विषय सामग्री सहित निर्मित किया गया है जो कक्षा 8 में प्रवेश लेने वाले हैं। इसमें शिक्षकों के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश और विद्यार्थियों के समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए आकर्षक गतिविधियाँ हैं। हम जानते हैं कि कक्षा 8 माध्यमिक स्तर की कक्षा के लिए एक सेतु के रूप में कार्य करती है। अतः यह भविष्य में शिक्षा की मजबूत नींव के लिए महत्वपूर्ण है।

हमें पूर्ण रूप से विश्वास है कि इस सेतु कार्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद विद्यार्थी नई पाठ्यपुस्तकों और अन्य शिक्षण-अधिगम सामग्री का सहजता से लाभ उठा पाएँगे। मैं सभी शिक्षकों से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावना के अनुरूप सांस्कृतिकता से निहित अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ावा देने का आग्रह करता हूँ जो वसुधैव कुटुंबकम— 'विश्व एक परिवार है'— की भावना के साथ प्रतिध्वनित होती है। यह हमारी यात्रा का महत्वपूर्ण चरण है और साथ मिलकर हम संपूर्ण शिक्षा समुदाय को, प्रत्येक विद्यार्थी को, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में सहयोग और सामूहिक कार्य की शक्ति का प्रदर्शन कर सकते हैं।

आइए! हम समर्पण और उत्साह के साथ, यह सुनिश्चित करते हुए अग्रसर हों कि प्रत्येक विद्यार्थी अधिगम के आनंद का अनुभव करे और अपनी संपूर्ण क्षमताओं को प्राप्त कर सके।

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

सेतु-कार्यक्रम निर्माण समूह

परामर्श एवं मार्गदर्शन

दिनेश प्रसाद सकलानी, *प्रोफेसर* एवं *निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

मञ्जुल भार्गव, *प्रोफेसर* एवं *उपाध्यक्ष*, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति

अनुराग बेहर, *सदस्य*, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति

गजानन लोंढे, हेड, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली (सदस्य सचिव)

सदस्य

नरेश कोहली, *एसोसिएट प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

वंदना शर्मा, *असिस्टेंट प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

अनुराधा, *हिंदी शिक्षक* (अवकाश प्राप्त), सरदार पटेल विद्यालय, लोधी स्टेट नई दिल्ली

साकेत बहुगुणा, *असिस्टेंट प्रोफेसर*, केंद्रीय हिंदी संस्थान-दिल्ली केंद्र, नई दिल्ली

संध्या सिंह, *प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग एवं संयोजक पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (हिंदी भाषा उप-समूह), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली (**सदस्य-समन्वयक**)

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों; पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह भाषा के सभी सदस्यों तथा अन्य अंतःसंबंधी विषयों के लिए गठित पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों के अध्यक्षों एवं सदस्यों के प्रति इस सेतु-कार्यक्रम के निर्माण की प्रक्रिया में मार्गदर्शन एवं समीक्षा हेतु बहुमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, विजयन के., *प्रोफेसर*, एवं शालू तिवारी, *असिस्टेंट प्रोफेसर*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग और बिनय पट्नायक, *सीनियर कंसलटेंट,* प्रोग्राम ऑफिस, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.) का सेतु-पाठ्यक्रम में दिए गए सहयोग के लिए आभार व्यक्त करती है।

इस सेतु-कार्यक्रम के निर्माण में जिन रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, उसके लिए कवि प्रदीप के गीत 'आओ बच्चो, तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की' के लिए मित्तुल प्रदीप; 'डाँडी या गोथा' के लिए मध्य प्रदेश जनजातीय संग्रहालय भोपाल से प्रकाशित पुस्तक रक्कू आदिवासी खेल; 'विज्ञापन लेखन' तथा 'नाइट पैरट' पाठ के लिए *राजस्थान पत्रिका* तथा 'क्यों नहीं मैं भी बनती लेखिका?' के लिए अमित दत्ता एवं सभी रचनाकारों, उनके परिजनों तथा उनसे संबद्ध प्रकाशकों के प्रति परिषद् अपना आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, शारदा कुमारी, प्राचार्य (अवकाश प्राप्त) को उनके दिए गए विशेष सहयोग के लिए आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, इस सेतु-कार्यक्रम को प्रस्तुत रूप में तैयार करने के लिए सुनीत मिश्र, *वरिष्ठ शोध सहायक*, सत्यम सिंह, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*, पूजा झा, राहुल कुमार यादव और तकनीकी सहयोग हेतु संविदा पर कार्यरत *डीटीपी ऑपरेटर* शारदा कुमारी एवं सगीर अहमद का हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, सेतु-कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए प्रकाशन प्रभाग के *प्रूफ रीडर* प्रियंका, अलका दिवाकर, राहिल अंसारी के प्रयासों की सराहना करती है। इसके साथ परिषद् सुरेन्द्र कुमार, *डीटीपी* (प्रभारी), अजय कुमार एवं मनोज कुमार, *डीटीपी ऑपरेटर* (संविदा), प्रकाशन प्रभाग का आभार व्यक्त करती है।

विषय-सूची

निदेशक की कलम से... *iii*

सेतु-कार्यक्रम के विषय में 1

1. आओ बच्चो, तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिन्दुस्तान की (कविता) 7
2. एक दौड़ ऐसी भी (कहानी) 15
3. डाँडी या गोथा 19
4. विज्ञापन लेखन 24
5. सृजनात्मक लेखन (नाइट पैरेट) 27

पढ़ने के लिए

क्यों नहीं मैं भी बनती लेखिका? 28

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता और अखंडता]** सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

सेतु-कार्यक्रम के विषय में

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में भाषा संबंधी बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए बहुभाषिकता, मातृभाषा में शिक्षण, शास्त्रीय भाषाओं के महत्व पर विशेष बल दिया गया है। संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा की शिक्षा संपूर्ण शिक्षा का केंद्र होती है। इसलिए भाषा शिक्षा पर विचार करते हुए सभी विषयों का समावेशन आवश्यक हो जाता है। विद्यालयी शिक्षा में सेतु-कार्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया में निरंतर प्रगति को ध्यान में रखते हुए ही उसका अभिकल्पन किया जाता है। इस प्रक्रिया में नयी अवधारणाओं एवं विषयों की समझ बनाने के लिए एक पुल बनाने की आवश्यकता है।

इसे ध्यान में रखते हुए कक्षा 8 के विद्यार्थियों को नई पाठ्यपुस्तक की तैयारी करवाने के लिए यह सेतु-कार्यक्रम तैयार किया गया है। इसे तैयार करते समय मध्य स्तर के विद्यार्थियों के लिए निर्मित 'सीखने के प्रतिफलों' को ध्यान में रखा गया है। साथ ही पाठों से जोड़ते हुए गतिविधियाँ भी तैयार की गई हैं। इसमें यह भी ध्यान में रखा गया है कि कक्षा 6 की नई पाठ्यपुस्तक तथा कक्षा 7 के कम पढ़े गए या नहीं पढ़े गए बिंदुओं को प्रस्तुत किया जा सके। विभिन्न गतिविधियों के संदर्भ में प्रस्तुति देने के लिए जिन विधाओं का चयन किया गया है उनमें कविता, कहानी, निबंध, विज्ञापन, पर्यावरण जैसी विधाओं एवं विषयों को इस तरह सम्मिलित किया गया है कि विद्यार्थी सहजता से एक से दूसरी कक्षा में अंतरण कर सकें।

मध्य स्तर के पाठ की पहली रचना के माध्यम से भाषा शिक्षण के लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। कक्षा 7 और कक्षा 8 के बीच पुल बनाते हुए कुछ गतिविधियाँ इस सेतु-कार्यक्रम में सम्मिलित हैं। सेतु-कार्यक्रम में दी गई रचनाओं में कवि प्रदीप की कविता 'आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिन्दुस्तान की' सम्मिलित की गई है। इससे विद्यार्थियों की तर्क क्षमता को विकसित करने के साथ-साथ राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करने पर बल दिया गया है। इस गीत को सुविधानुसार सुनवाया और गवाया जा सकता है। साथ ही इसमें राष्ट्र प्रेम, जलियाँवाला बाग की घटना और आजादी की क्रांति से जुड़ी अन्य घटनाएँ, जैसे— काकोरी घटना, नमक सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, साइमन कमीशन आदि पर भी विद्यार्थियों से बातचीत की जा सकती है। पाठ के अन्य बिंदुओं पर भी विस्तार से काम करवाया जा सकता है ताकि कविता पढ़ने के बाद विद्यार्थियों में ललक पैदा हो जाए कि वे देश की आजादी के विषय में जानें और उससे प्रेरित हों।

'एक दौड़ ऐसी भी' रचना विद्यार्थियों को संवेदनशील तथा समावेशी बनने के अवसर देती है। इस रचना के द्वारा विशेष रूप से सक्षम लोगों के प्रति मैत्री भावना के लिए उन्हें उत्साहित किया जा सकता है और समावेशन के प्रति जागरूक भी बनाया जा सकता है। यह पाठ समावेशी परिदृश्य को ध्यान में रखता है। इस दृष्टि से पाठ की गतिविधियों को कराते समय कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी को इसमें सम्मिलित किया जाना चाहिए। साथ ही समूह बनाते समय यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि भिन्न-भिन्न परिवेश के विद्यार्थी और चुनौतीपूर्ण विद्यार्थियों को भी एक साथ समूह में रखा जाए।

इस सेतु-कार्यक्रम में पारंपरिक खेलों की महत्ता को ध्यान में रखते हुए 'डाँडी या गोथा' पाठ को सम्मिलित किया गया है। इन खेलों पर चर्चा व गतिविधियाँ कराते समय बहुत से अन्य खेजों, जो अलग-अलग राज्यों से संबंध रखते हैं उन पर भी बातचीत के अवसर होने चाहिए। हमारा प्रयास यह भी होना चाहिए कि प्रत्येक विद्यार्थी खेल संबंधी अपने शब्द भंडार को कक्षा में अपनी मातृभाषा में प्रस्तुत करें। इसके द्वारा खेल संबंधी

एक बहुभाषिक शब्द भंडार तैयार हो जाएगा। विद्यार्थियों को भारतीय खेलों के साथ-साथ पारंपरिक खेलों की जानकारी होना भी आवश्यक है ताकि वर्तमान पीढ़ी मात्र भाषिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी सचेत एवं जागरूक बन सके। इस रचना के माध्यम से विभिन्न स्तरों पर भारतीय ज्ञान परंपरा और जीवन-मूल्यों की समझ को मजबूत किया जा सकता है।

पठन विकास को ध्यान में रखते हुए कई तरीके अपनाने की आवश्यकता है, जैसे—चित्र पठन, आरेख पठन, फिल्म पठन, विज्ञापन पठन आदि। यह गतिविधियाँ विद्यार्थियों के पठन का विस्तार करने में सहायक हो सकती हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए यहाँ एक विज्ञापन पाठ लिया गया है। इस विज्ञापन के माध्यम से एक ओर साइबर अपराध जैसे विषय पर चर्चा का अवसर मिल सकता है तो दूसरी ओर हमें कोशिश करनी होगी कि इसके द्वारा विज्ञापन निर्माण को लेकर विद्यार्थियों को सहज अभिव्यक्ति के अवसर भी दिए जाएँ। एक ही पाठ में अनेक गतिविधियों के माध्यम से भाषा के विभिन्न पक्ष उद्घाटित किए जा सकते हैं।

स्वयं पठन हमारा एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। विद्यार्थी स्वतंत्र पाठक या चिंतक बन सकें, यह शिक्षा का एक बहुत बड़ा उद्देश्य है। इसी उद्देश्य से 'पढ़ने के लिए' एक ऐसी रचना सम्मिलित की गई है जो विद्यार्थियों को एक अच्छा पाठक बनने के साथ-साथ लेखक बनने के लिए भी प्रेरित कर सकती है। इन उद्देश्यों को पूरा करने में 'क्यों नहीं मैं भी बनती लेखिका' आधार बन सकती है। कहानी पढ़ने के बाद अतिरिक्त अध्ययन के लिए प्रेरित किया जा सकता है। 'हमारा पर्यावरण' पाठ में लेखन की शैली और तरीकों पर बात की जा सकती है। 'नाइट पैरेट' की दुनिया को कम शब्दों में कैसे अभिव्यक्त किया जा सकता है, यह भी ध्यान देने योग्य है। इस तरह की गतिविधियों से विद्यार्थियों में पढ़ने की रुचि विकसित होगी।

उपर्युक्त सेतु-कार्यक्रम की रचनाओं को प्रस्तुत करते समय यह प्रयास किया गया है कि सीखने-सिखाने की आनंददायक यात्रा से होते हुए विद्यार्थी समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं, रुचियों और अपेक्षाओं पर विचार कर सकें। वे अपने आस-पास के समाज, गौरवशाली परंपराओं और संस्कृति को समझ सकें। इन रचनाओं की गतिविधियों को संवादात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है। अध्यापकों से यह अपेक्षा होगी कि वे कक्षा 7 और 8 के बीच सहज भाषा सेतु निर्माण करते हुए स्वतंत्र और निर्भय माहौल भी विद्यार्थियों को प्रदान करें। हमें यह उम्मीद है कि यह सेतु-कार्यक्रम भाषा शिक्षा संबंधित पहलुओं को समझने में मदद करेगा। साथ ही यह सेतु-कार्यक्रम उन्हें कक्षा 8 की पाठ्यपुस्तक पढ़ने के लिए आरंभिक पृष्ठभूमि के रूप में तैयार करेगा।

अध्यापकों के लिए

- इस सेतु-कार्यक्रम में सम्मिलित पहली रचना 'आओ बच्चो, तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की' कवि प्रदीप के इस गीत को सुविधा हो तो सुनवाया तथा गवाया जा सकता है। बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर पर चर्चा अवश्य करवाएँ। उनके तर्क और उत्तर को प्रोत्साहित करें। यदि उनके तर्क हमसे अलग हैं पर तर्क में दम है तो हम अपनी सोच बदल सकते हैं।
- मिलकर करें मिलान में पाठ का भाव खुलता है विद्यार्थियों को इस बात का संकेत दिया जा सकता है।
- राष्ट्र-प्रेम के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया जा सकता है। जलियाँवाला बाग की घटना पर चर्चा की जा सकती है। इसके साथ ही आजादी की क्रांति से जुड़ी अन्य घटनाएँ—काकोरी

की घटना, नमक सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो, साइमन कमीशन आदि पर भी बातचीत की जा सकती है।

- पाठ के अन्य बिंदुओं पर भी विद्यार्थियों से विस्तार से कार्य कराया जा सकता है।
- कविता पढ़ने के बाद विद्यार्थी में ललक पैदा हो जाए कि वह देश की आजादी के विषय में जानने के लिए उत्सुक हो जाएँ।
- कोई भी रचना आनंद के साथ-साथ उद्देश्य लेकर भी सेतु-कार्यक्रम का हिस्सा होती है। 'एक दौड़ ऐसी भी' पाठ विद्यार्थियों को संवेदनशील बनने के अवसर देता है। इसके माध्यम से विशेष रूप से सक्षम लोगों के प्रति सामान्य मैत्री भावना के लिए भी उत्साहित किया जा सकता है। साथ ही समावेशन के प्रति जागरूक बनाया जा सकता है।
- 'डाँडी या गोथा' रचना भारतीय खेलों के विषय में एवं खेल-भावना की जानकारी हेतु आवश्यक बिंदु है। इससे वर्तमान पीढ़ी को सचेत व जागरूक बनाया जा सकता है। विभिन्न स्तरों पर भारतीय ज्ञान परंपरा और जीवन-मूल्यों की समझ को विस्तार दिया जा सकता है।
- विज्ञापन आदि रचनाओं से भाषा की पकड़ मजबूत की जा सकती है।
- एक ही पाठ में अनेक गतिविधियों से भाषा के विभिन्न पक्ष उद्घाटित किए जा सकते हैं।
- 'पढ़ने के लिए' के अंतर्गत 'क्यों नहीं मैं भी बनती लेखिका?' कहानी विद्यार्थियों के कलाकार रूप को जगा सकती है। साथ ही कहानी पढ़ने के बाद और अधिक अध्ययन के लिए प्रेरित किया जा सकता है। उसका मंचन कराया जा सकता है। प्रश्न निर्माण करवाया जा सकता है।

इस प्रकार तरह-तरह की गतिविधियों से पढ़ने में रुचि पैदा की जा सकती है। ग्रीष्म अवकाश में समाचार-पत्र पढ़ने का काम दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त खेल का पन्ना पढ़ने और अपनी पसंद के समाचार काटकर स्क्रैप बुक बनवाने का कार्य भी दिया जा सकता है। जिसे बाद में विद्यार्थी आपस में बदल कर पढ़ सकते हैं और चर्चा भी कर सकते हैं।

उद्देश्य

1. विद्यार्थियों को दक्षता आधारित उपागमों से परिचित होने के अवसर देना।
2. विद्यार्थियों को नवीन पाठ्यपुस्तकों के नवाचारी स्वरूप और अभ्यास प्रश्नों की दक्षता आधारित प्रकृति को जानने-समझने के अवसर देना।
3. विविध प्रकार की रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से हिंदी भाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।

सेतु-कार्यक्रम की साप्ताहिक योजना

विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के अनुसार मध्य स्तर पर हिंदी शिक्षण के लिए जो समय आवंटित किया गया है, उसे ध्यान में रखते हुए विद्यालय अपने स्थानीय-परिवेश प्रबंधन व्यवस्था के अनुसार सेतु-कार्यक्रम के लिए साप्ताहिक योजना तैयार कर सकते हैं।

दी गई सामग्री छह सप्ताह को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। भाषा के सभी कौशल (बोलना-सुनना, पढ़ना-लिखना और चिंतन) ये सभी एक साथ चलते हैं, उदाहरण के लिए ऐसा नहीं होता कि पहले केवल 'बोलने' के कौशल पर कार्य किया जाएगा और उसके बाद 'सुनने' या किसी दूसरे कौशल पर कार्य किया जाएगा।

इसलिए अध्यापक अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर, रुझान और मानसिक भावात्मक तत्परता को ध्यान में रखते हुए सेतु-कार्यक्रम की गतिविधियों को छह सप्ताह में आवंटित कर सकते हैं। यह भी ध्यान रहे कि विद्यार्थियों को स्वपठन और स्वमूल्यांकन करने के लिए सतत रूप से प्रोत्साहित किया जाए।

सेतु-कार्यक्रम के लिए प्रयुक्त शिक्षणशास्त्रीय प्रक्रियाएँ एवं आकलन

प्रस्तुत सेतु-कार्यक्रम को बहुभाषी संदर्भ में रखकर देखने की आवश्यकता है। बच्चे अलग-अलग भाषाई-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते हैं। सेतु-कार्यक्रम की गतिविधियाँ कुछ इस तरह से तैयार की गई हैं जो सहजता से विद्यार्थियों के संवेदना लोक की साथी बन जाएँगीं।

अकादमिक सत्र के आरंभ में कक्षा के अधिकांश बच्चे पिछली कक्षा से प्रोन्नत होकर आते हैं। कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं जो अभिभावकों के स्थानांतरण के कारण अथवा दूसरे कारणों के रहते कक्षा में नामांकित हुए होंगे और शेष बच्चों से घुल-मिल नहीं पाए होंगे।

सेतु-कार्यक्रम का संचालन एवं क्रियान्वयन इस प्रकार से हो कि हिंदी सीखने-सिखाने के साथ-साथ सभी बच्चों की भावात्मक आवश्यकताओं को भी संबोधित किया जा सके। उनकी भाषाओं का स्वागत किया जाए तथा उनकी सहज अभिव्यक्ति क्षमता का उपयोग करते हुए हिंदी का यह सेतु-कार्यक्रम संचालित किया जाए। प्रस्तुत सेतु-कार्यक्रम एक ओर नवीन पाठ्यपुस्तक से परिचित करवाने का महती कार्य करेगा तो दूसरी ओर विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 द्वारा हिंदी शिक्षण के लिए अनुशंसित उद्देश्यों की प्राप्ति में सहयोग करेगा।

सेतु-कार्यक्रम माँग करता है कि कक्षा में ऊर्जा एवं उत्साहवर्धक परिवेश सृजित किया जाए। इसके लिए सबसे पहले आवश्यक है विद्यार्थियों से बातचीत। विद्यार्थियों के साथ बातचीत आरंभ करने के लिए उनके स्वयं के अनुभवों को केंद्र में रखा जा सकता है। उनकी रुचियाँ, पारिवारिक सदस्यों के साथ संबंध, पड़ोसियों से संबंध, आस-पास के पशु-पक्षियों के साथ अनुभव, मोहल्ले से लेकर वैश्विक स्तर तक हो रही घटनाओं के प्रति उनके दृष्टिकोण पर बात की जा सकती है। इस बातचीत के आधार पर सेतु-कार्यक्रम की गतिविधियों तक पहुँचा जा सकता है।

कहानी सुनना और सुनाना केवल हिंदी शिक्षण ही नहीं अपितु सभी पाठ्यचर्यक विषयों के शिक्षण के संदर्भ में बहुत ही महत्वपूर्ण युक्ति है। विद्यार्थियों को अपनी पिछली कक्षा की पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यपुस्तक से इतर पुस्तकों में पढ़ी व किसी भी स्रोत से सुनी कहानियों को सुनाने के लिए कहा जा सकता है। आत्मविश्वास के साथ कहानी सुनाने का कौशल धीरे-धीरे कहानी सृजन की राह भी आलोकित करेगा। विद्यार्थियों के सृजनात्मक स्तर से जुड़े समसामयिक विषयों पर समूह में चर्चाएँ आयोजित की जा सकती हैं।

विद्यार्थियों को समसामयिक विषयों से जुड़े कुछ चित्र, फोटोग्राफ, पोस्टर इत्यादि देकर सामूहिक रूप से मौखिक एवं लिखित रूप से विश्लेषण करवाया जा सकता है। विज्ञापन, साइनबोर्ड, भित्ति लेखन आदि में जहाँ-जहाँ भी भाषा उपलब्ध है, उनका भरपूर उपयोग किया जा सकता है।

सभी विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण युक्तियों में विविधता लाने के लिए कला समेकित और खेल समेकित अधिगम को उपयुक्त स्थान दिया जाए।

सामूहिक गतिविधियों का आयोजन करते समय समूह संरचना पर गंभीरता से ध्यान देना होगा। आमतौर पर अनुक्रमांक के आधार पर अथवा 'कक्षा में जैसे बैठे हैं' के आधार पर विद्यार्थियों के समूह बना दिए जाते हैं। इस तरह से समूह में विविधता नहीं आ पाती है। यहाँ पर अपेक्षा यह है कि सचेत रूप से विद्यार्थियों के समूह बनाए जाएँ। समूह में रुचि, क्षमता एवं सीखने की भिन्न-भिन्न गति वाले विद्यार्थी हों तो अधिगम परिणाम बेहतर होंगे। समूह संरचना के संदर्भ में एक बात और भी महत्वपूर्ण है कि सेतु-कार्यक्रम की भिन्न-भिन्न गतिविधियों के लिए हर बार नए समूह बनाए जाएँ। अभिनय, गीत, संवाद, परिचर्चा, अंत्याक्षरी, घटनावर्णन, प्रश्नोत्तरी, भाषण (वक्तव्य प्रस्तुति) ये सभी युक्तियाँ सेतु-कार्यक्रम में सम्मिलित हैं। इनका सृजनशील उपयोग विद्यार्थियों को उत्साही पाठक बनने की दिशा की ओर ले जाएगा।

चूँकि प्रस्तुत सेतु-कार्यक्रम अनुभवजन्य अधिगम पर केंद्रित है अतः आकलन एवं मूल्यांकन की प्रक्रिया भी गुणात्मक होगी। विद्यार्थियों के भाषिक, साहित्यिक और अन्य विषयक समझ बनाने के स्वाभाविक कौशलों का समुचित अवलोकन सतत रूप से किया जा सकता है। अवलोकन के साथ-साथ विद्यार्थियों की दक्षता विकास संबंधी-टीपों को नोट किया जाना आवश्यक होगा। यह अनिवार्य नहीं है कि प्रत्येक विद्यार्थी के बारे में प्रतिदिन टिप्पणी लिखी जाए। समय की उपलब्धता के अनुसार प्रतिदिन पाँच-पाँच विद्यार्थियों के भाषिक कौशलों के विकास को केंद्र में रखकर टिप्पणियाँ लिखी जा सकती हैं जो अध्यापक को अपनी शिक्षण युक्तियों में आवश्यक परिवर्तन करने, अभिभावकों को सहयोग देने और विद्यार्थियों को अपनी जाँच स्वयं करने में सहायता प्रदान करेंगी।

नवीन पाठ्यपुस्तकों से संबद्धता

विद्यालयी शिक्षा के मध्य स्तर की शिक्षा पूरी होने तक विद्यार्थी का भाषा-बोध और साहित्य बोध इस सीमा तक विकसित हो जाए कि उनमें किसी रचना के बारे में स्वतंत्र राय बनाने का आत्मविश्वास विकसित हो सके। वे पाठ्यपुस्तकों की परिधि के बाहर भी भिन्न-भिन्न स्रोतों से उपलब्ध हिंदी की सामग्रियों से जुड़कर उन पर भावनात्मक और बौद्धिक प्रतिक्रिया कर सकें। इस महत्वपूर्ण उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हिंदी की कक्षा 6 व 7 की पाठ्यपुस्तक तैयार की गई हैं और 8 वीं की पाठ्यपुस्तक तैयार होने की प्रक्रिया में है। प्रस्तुत सेतु-कार्यक्रम पाठ्यपुस्तकों की इस प्रकृति को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

जिस तरह से *मल्हार* में विषय-वस्तु, जैसे— पर्यावरण, कला, विज्ञान, इतिहास, ज्ञान एवं परंपरा, संवैधानिक दायित्व एवं विधाओं में कहानी, कविता, नाटक, संस्मरण, पत्र, विज्ञापन, साक्षात्कार आदि को स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत किया गया है, उसी के समानांतर सेतु-कार्यक्रम में भी विषयवस्तु एवं विधाओं का रचनात्मक कोलाज रचा गया है। हिंदी के विभिन्न प्रयोगों की बानगी और उसकी आँचलिक व साहित्यिक छटा के वैविध्य को प्रस्तुत किया है। सेतु-कार्यक्रम का आरंभ देश के प्रति गर्व का भाव जगाने वाली कविता के साथ किया गया है, पाठ्यपुस्तकों में भी इसी तरह का भाव समाहित है। पाठ्यपुस्तकों में शब्द पहेली,

संवाद लेखन, चित्रकारी, अभिनय, शब्दकोश का प्रयोग, परियोजना कार्य, भाषायी कौशल विकसित करने के लिए आकर्षक रूप से दिए गए हैं। उसी प्रकृति को सेतु कार्यक्रम में सहज-स्वाभाविक रूप से बनाए रखा गया है। ये सभी गतिविधियाँ अधिगम प्रतिफलों की प्राप्ति को संबोधित करती हैं।

विद्यार्थियों के लिए

आपने नई कक्षा में प्रवेश किया है, आपको हार्दिक शुभकामनाएँ। आपने पिछली कक्षा में *मल्हार* के माध्यम से हिंदी भाषा के विविध रूपों को जाना और समझा है। अपने जीवन में दिन-प्रतिदिन के कार्यों को करने के लिए, एक-दूसरे से जुड़ने के लिए, कल्पना-अनुमान-तर्क करने के लिए, वस्तु स्थितियों को जाँचने-परखने के लिए हमें विभिन्न कौशलों की आवश्यकता होती है। *मल्हार* की रचनाओं के पठन-पाठन, उसके अभ्यास कार्यों व परियोजनाओं के माध्यम से आपने इन सभी कौशलों को आत्मसात करने का सफल प्रयास किया। अगली कक्षा की पाठ्यपुस्तक में भी इन सभी कौशलों के विकास एवं विस्तार के लिए तरह-तरह की रचनाओं को रोचक गतिविधियों तथा अभ्यास प्रश्नों के साथ प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत सेतु-कार्यक्रम एक ऐसा द्वार है जो आपको हिंदी की पाठ्यपुस्तक में बहुत ही सहजता से प्रवेश कराएगा। आपको ऐसा नहीं लगेगा कि आप हिंदी भाषा की किसी अपरिचित-सी दुनिया में प्रवेश कर रहे हैं।

अब तक विद्यालय में हिंदी पढ़ने के बाद इस भाषा पर आपकी पकड़ इतनी मजबूत हो गई होगी कि आप प्रत्येक परिस्थिति में अपनी बात बिना किसी संकोच के संप्रेषित कर पाते हैं। औपचारिक चर्चाओं में अपना मत रख पाते हैं, अपने विचार तथा भावनाओं को स्पष्ट, व्यवस्थित और सशक्त रूप से अभिव्यक्त कर पाते हैं। आप अपने अनुभवों, कल्पना और अनुमान को आधार बनाते हुए भिन्न-भिन्न प्रकार का लेखन कर पाते हैं। वस्तु स्थितियों को आलोचनात्मक तरीके से परखते हैं। इन सभी कौशलों के विस्तार के लिए छह सप्ताह की अवधि वाला सेतु-कार्यक्रम आपको विविध प्रकार की रचनाओं के पठन और उनसे संबंधित रोचक गतिविधियों में संलग्न होने के अवसर देगा।

सेतु-कार्यक्रम की गतिविधियों का भरपूर आनंद लेने के लिए आप हिंदी भाषा के अध्यापक के साथ-साथ अन्य पाठ्यचर्यक विषयों के अध्यापकों से भी सुझाव ले सकते हैं। कुछ गतिविधियाँ ऐसी होंगी जिनके कार्यान्वयन हेतु आप अपने परिवार के सदस्यों तथा आस-पड़ोस के लोगों से भी संवाद करने की आवश्यकता महसूस करेंगे। सेतु-कार्यक्रम आपको पुस्तकालय में भी रचनात्मक समय बिताने के लिए प्रेरित करेगा और साथ ही शब्दकोश से भी मित्रता की बात करेगा।

1. आओ बच्चो, तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की

आओ बच्चो, तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की
आओ बच्चो, तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

उत्तर में रखवाली करता पर्वतराज विराट है
दक्षिण में चरणों को धोता सागर का सम्राट है
जमुना जी के तट को देखो गंगा का ये घाट है
बाट-बाट में हाट-हाट में यहाँ निराला ठाठ है
देखो, ये तस्वीरें अपने गौरव की अभिमान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

ये है अपना राजपूताना नाज इसे तलवारों पे
इसने सारा जीवन काटा बरछी तीर कटारों पे
ये प्रताप का वतन पला है आजादी के नारों पे
कूद पड़ी थी यहाँ हजारों पद्‌मिनियाँ अँगारों पे
बोल रही है कण-कण से कुर्बानी राजस्थान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

देखो, मुल्क मराठों का ये यहाँ शिवाजी डोला था
मुगलों की ताकत को जिसने तलवारों पे तोला था
हर पर्वत पे आग जली थी हर पत्थर एक शोला था
बोली हर-हर महादेव की बच्चा-बच्चा बोला था

शेर शिवाजी ने रखी थी लाज हमारी शान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

जलियाँवाला बाग ये देखो, यहीं चली थी गोलियाँ
ये मत पूछो किसने खेली यहाँ खून की होलियाँ
एक तरफ बंदूकें दन-दन एक तरफ थी टोलियाँ
मरनेवाले बोल रहे थे इंकलाब की बोलियाँ
यहाँ लगा दी बहनों ने भी बाज़ी अपनी जान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

ये देखो बंगाल यहाँ का हर चप्पा हरियाला है
यहाँ का बच्चा-बच्चा अपने देश पे मरनेवाला है
ढाला है इसको बिजली ने भूचालों ने पाला है
मुट्ठी में तूफान बँधा है और प्राण में ज्वाला है
जन्मभूमि है यही हमारे वीर सुभाष महान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

— *कवि प्रदीप*

पाठ से

आइए, अब हम इस पाठ पर विस्तार से चर्चा करें। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. हिंदुस्तान को बलिदान की धरती क्यों कहा गया है?
   - बलिदान देने वालों की कतार लगी है।
   - हर व्यक्ति देशहित में लगा है।
   - हमारे वीरों ने अपनी शहादत से इसे मुक्त करवाया है।
   - यहाँ का हर बच्चा देश के लिए जन्म लेता है और मरता है।

2. "ये प्रताप का वतन पला है आजादी के नारों पे" इस पंक्ति में 'प्रताप' का तात्पर्य है—
   - महामहिम
   - शूरवीर
   - शिव प्रताप
   - महाराणा प्रताप

3 "झाँकी हिंदुस्तान की" से कवि का तात्पर्य है—
   - 26 जनवरी पर भारत की झाँकी देखना
   - संपूर्ण भारत के राज्यों की एक झलक प्रस्तुत करना
   - भारत के गौरवशाली व बलिदानी इतिहास की झलक प्रस्तुत करना
   - देश प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना से भरना

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

जल्दी-जल्दी बताओ तो जानें

(क) उत्तर का पर्वतराज कौन है?

(ख) दक्षिण के सागर को सम्राट क्यों कहा गया है?

(ग) ठाठ को निराला क्यों कहा गया है?

(घ) भारत को बलिदान की धरती क्यों कहा गया है?

मिलकर करें मिलान

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे स्तंभ 1 में दी गई हैं, उनके भावार्थ स्तंभ 2 में दिए गए हैं। स्तंभ 1 की पंक्तियों को स्तंभ 2 के उपयुक्त भावार्थ से मिलान कजिए—

स्तंभ 1	स्तंभ 2
शेर शिवाजी ने रखी थी लाज हमारी शान की	जलियाँवाला बाग में जनरल डायर ने दनादन गोलियाँ बरसाईं लेकिन हमारे वीर और वीरांगनाएँ डटकर खड़े रहे।
यहाँ लगा दी बहनों ने भी बाजी अपनी जान की	बंगाल (भारत) की संपन्नता देखते ही बनती है। हरी-भरी धरती सबका मन मोह लेती है।
एक तरफ बंदूकें दन-दन एक तरफ थीं टोलियाँ	अपने देश की स्वतंत्रता के लिए देश की बेटियों का योगदान भी किसी से कम नहीं था।
ये देखो बंगाल यहाँ का हर चप्पा हरियाला है	मराठों के सरदार शिवाजी महाराज ने अपनी शक्ति के आगे मुगलों की ताकत को भी हिला दिया और आन बान शान का बाल बांका भी न होने दिया।

सोच-विचार के लिए

कविता को एक बार फिर से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) 'इस मिट्टी से तिलक करो' कवि ने ऐसा क्यों कहा है?

(ख) इस कविता में शिवाजी की शक्ति व पराक्रम को किस प्रकार दर्शाया गया है?

(ग) जलियाँवाला बाग की घटना के विषय में पता लगाइए और लिखिए।

इस पर समूह में परस्पर चर्चा कीजिए।

कविता की रचना

आओ बच्चो, तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की
आओ बच्चो, तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

इन पंक्तियों को अपने साथियों के साथ मिलकर लय सहित गाने का प्रयास कीजिए। आप हाथों से ताली भी बजा सकते हैं। अब पहचानिए कि क्या पहली दो पंक्तियों को गाने में समान समय लगा या अलग-अलग? आपने अवश्य ही अनुभव किया होगा कि पहली तीन पंक्तियों को गाने में लगभग एक

समान समय लगा। जबकि चौथी पंक्ति में लगभग आधा समय लगा। कविता की सभी पंक्तियों को गाने में लगभग इतना ही समय लगता है। इस विशेषता के कारण यह कविता और अधिक प्रभावशाली हो गई है। इसी प्रकार आपको इस कविता में और भी विशेष बातें दिखाई देंगी—

(क) इस कविता को एक बार फिर से पढ़िए और अपने-अपने समूह में मिलकर इसकी विशेषताओं की सूची बनाइए, जैसे— इस कविता में पद की छह-छह पंक्तियों के बाद एक टेक की पंक्ति आ रही है आदि।

(ख) अपने समूह की सूची को कक्षा में साझा कीजिए।

(ग) यह गीत 'जागृति' फिल्म में है। इसे इंटरनेट पर खोजकर सुनिए और साथियों के साथ मिलकर इसकी धुन में इसे गाइए।

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) इस कविता को पढ़ने के बाद अपने-अपने अनुमान से बताइए कि स्वतंत्रता आंदोलन के समय देश में किस तरह की हलचल रही होगी? देश के बच्चे, वृद्ध, युवक-युवतियाँ सभी उसमें सम्मिलित थे, उनकी इस आंदोलन में भागीदारी किस प्रकार से रही होगी?

(ख) कविता में देश की विशेषताओं को उद्घाटित किया गया है, इसके पीछे क्या कारण रहे होंगे?

पता लगाइए

कविता में आए कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इन शब्दों के लिए आपकी मातृभाषा में क्या शब्द प्रयोग किए जाते हैं? आपके मित्र की भाषा और किसी अन्य भाषा में भी इन्हें क्या कहते हैं? लिखिए तथा साथ ही ये सभी शब्द कितने समान या कितने भिन्न हैं इस पर भी चर्चा कीजिए—

कविता में आए शब्द	आपकी मातृभाषा	आपकी भाषा का नाम	मित्र की भाषा	मित्र की भाषा का नाम	अन्य भाषा	अन्य भाषा का नाम
मिट्टी	माटी	राजस्थानी	मृदा (कन्नड़)	कन्नड़	soil	अंग्रेजी
धरती						
आजादी						
बलिदान						
तलवार						
तीर						

शब्द एक अर्थ अनेक

(क) कभी-कभी एक शब्द के कई अर्थ होते हैं, इन अर्थों को अलग-अलग संदर्भों से समझा जा सकता है, जैसे—

- 'ढाला है इसको भूचालों ने पाला है।'
  यहाँ 'पाला' का अर्थ पालन-पोषण है।
- इस बार इतना पाला पड़ा कि हमारी सारी फसल नष्ट हो गई।
  यहाँ पाला पड़ने का अर्थ है— अत्यधिक ठंड।

अब नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। आप भी निम्नलिखित शब्दों के ऐसे वाक्य बनाइए जिनमें इनके दो-दो अलग अर्थ स्पष्ट हो जाएँ।

घाट ....
....

बाट ....
....

ठाठ ....
....

(ख) नीचे दिए गए समान लय वाले शब्दों की सूची में समान लय वाले नए शब्द जोड़िए और अपनी कक्षा में साझा कीजिए।

साठ, पाठ ....

घाट, खाट ....

(ग) परस्पर विचार कीजिए कि कविता में तुकांत शब्दों का प्रयोग क्यों किया जाता है?

पाठ से आगे

(क) इस कविता में कवि ने अपने देश की पहचान इस रूप में दी है—

"उत्तर में रखवाली करता पर्वतराज विराट है,
दक्षिण में चरणों को धोता सागर का सम्राट है"

आप अपने राज्य को किस प्रकार प्रस्तुत करना चाहेंगे? उसे कविता या लेख के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

(ख) मानचित्र में अपने राज्य को चिह्नित कीजिए।

(ग) देश की स्वतंत्रता आंदोलन के समय जनता में जागरूकता के लिए अनेक नारे प्रचलित हुए उनकी एक सूची बनाइए।

रचनात्मकता की ओर

इस कविता का एक सुंदर चित्र बनाइए—

गीत की बात

प्रस्तुत कविता में 'वंदे मातरम्' पद का प्रयोग हुआ है। आप जानते ही होंगे कि इसे भारत का राष्ट्रीय गीत कहा जाता है। आइए इस गीत को पूरा पढ़ते हैं और समझते हैं—

वंदे मातरम्	भावार्थ
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्!	हे माता, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ!
सुजलाम्, सुफलाम्	तुम जल से भरी हुई हो, फलों से परिपूर्ण हो।

मलयज शीतलाम्	तुम्हें मलय से आती हुई पवन शीतलता प्रदान करती है।
शस्यश्यामलाम्, मातरम्!	तुम अन्न के खेतों से परिपूर्ण वंदनीय माता हो!
वंदे मातरम्!	हे माँ मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ!
शुभ्रज्योत्सना पुलकित यामिनीम्	जिसकी रमणीय रात्रि को चंद्रमा का प्रकाश शोभायमान करता है।
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्	जो खिले हुए फूलों के पेड़ों से सुसज्जित है।
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्	सदैव हँसने वाली, मधुर भाषा बोलने वाली।
सुखदाम् वरदाम्, मातरम्!	सुख देने वाली, वरदान-देने वाली माँ।
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्॥	मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ!

आप नीचे दी गई इंटरनेट कड़ी पर इसे संगीत के साथ सुन भी सकते हैं—

https://knowindia.india.gov.in/hindi/national-identity-elements/national-song.php

आज की पहेली

बूझो तो जानें

- तीन अक्षर का मेरा नाम, उल्टा सीधा एक समान।
  दिन में जगता, रात में सोता, यही मेरी पहचान।
- एक पक्षी ऐसा अलबेला, बिना पंख उड़ रहा अकेला।
  बाँध गले में लंबी डोर, पकड़ रहा अंबर का छोर।
- रात में हूँ दिन में नहीं, दीये के नीचे हूँ ऊपर नहीं
  बोलो, बोलो— मैं हूँ कौन?
- मुझमें समाया फल, फूल और मिठाई
  सबके मुँह में आया पानी मेरे भाई।
- सड़क है पर गाड़ी नहीं, जंगल है पर पेड़ नहीं
  शहर है पर घर नहीं, समंदर है पर पानी नहीं।

2. एक दौड़ ऐसी भी

कई साल पहले ओलंपिक खेलों के दौरान एक विशेष दौड़ होने जा रही थी। सौ मीटर की इस दौड़ में एक आश्चर्यजनक घटना हुई। नौ प्रतिभागी आरंभिक रेखा पर तैयार खड़े थे। उन सभी को कोई-न-कोई शारीरिक विकलांगता थी।

सीटी बजी, सभी दौड़ पड़े। बहुत तीव्र तो नहीं, पर उनमें जीतने की होड़ अवश्य तेज़ थी। सभी जीतने की उत्सुकता के साथ आगे बढ़े। सभी, बस एक छोटे से लड़के को छोड़कर। तभी छोटा लड़का ठोकर खाकर लड़खड़ाया, गिरा और रो पड़ा।

उसकी पुकार सुनकर बाकी प्रतिभागी दौड़ना छोड़ देखने लगे कि क्या हुआ? फिर, एक-एक करके वे सब उस बच्चे की सहायता के लिए उसके पास आने लगे। सब के सब लौट आए। उसे दोबारा खड़ा किया। उसके आँसू पोंछे, धूल साफ की। वह छोटा लड़का एक ऐसी बीमारी से ग्रस्त था, जिसमें शरीर के अंगों की बढ़त धीमी होती है और उनमें तालमेल की कमी भी रहती है।

फिर तो सारे बच्चों ने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और साथ मिलकर दौड़ लगाई और सब के सब अंतिम रेखा तक एक साथ पहुँच गए। दर्शक मंत्रमुग्ध होकर देखते रहे, इस प्रश्न के साथ कि सब के सब एक साथ यह दौड़ जीते हैं, इनमें से किसी एक को स्वर्ण-पदक कैसे दिया जा सकता है? निर्णायकों ने सबको स्वर्ण-पदक देकर समस्या का बढ़िया हल ढूँढ़ निकाला। उस दिन मित्रता का अनोखा दृश्य देख दर्शकों की तालियाँ थमने का नाम नहीं ले रही थीं।

पाठ से

आइए, अब हम इस पाठ पर विस्तार से चर्चा करें। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. अन्य लड़कों ने उस गिरे हुए लड़के को उठाया क्योंकि—
   - वे चालाक थे।
   - वे सच्चे मित्र थे।
   - वे स्वार्थी थे।
   - वे हराना चाहते थे।
2. दर्शकों द्वारा दौड़ को मंत्रमुग्ध होकर देखने का कारण था—
   - बीमार बच्चा भी दौड़ रहा था।
   - दौड़ का परिणाम अनूठा था।
   - सब बच्चे उसकी सहायता के लिए दौड़े।
   - बीमार बच्चे को ही स्वर्ण-पदक मिला।

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

जल्दी-जल्दी बताओ तो जानें

(क) कहानी में कौन-सी दौड़ की बात हो रही है?

(ख) वह छोटा लड़का क्यों गिर गया?

(ग) 'सब बच्चे एक साथ दौड़ जीते' तब निर्णायकों ने स्वर्ण-पदक विजेता का समाधान कैसे निकाला?

मिलकर करें मिलान

नीचे दिए गए स्तंभ में विभिन्न प्रकार के खेलों के नाम और उनके खेलने के स्थान दिए गए हैं। खेल को उनके उपयुक्त स्थान के साथ रेखा खींचकर मिलान कीजिए—

	खेल	खेलने के स्थान
1.	क्रिकेट	1. ट्रैक
2.	हॉकी	
3.	बैडमिंटन	
4.	कैरम	2. नेट
5.	शतरंज	
6.	फुटबॉल	
7.	वॉलीबॉल	
8.	सौ मीटर दौड़	3. कोर्ट
9.	लूडो	
10.	कबड्डी	
11.	खो-खो	4. मैदान
12.	भाला फेंक	
13.	ऊँची कूद	
14.	लंबी कूद	5. अंत:कक्ष
15.	रिले रेस	
16.	बाधा दौड़	

सोच-विचार के लिए

पाठ को एक बार फिर से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) सभी बच्चे आगे दौड़ने के बजाय पीछे क्यों लौट आए?

(ख) बाकी दौड़ने वाले बच्चों के मन में यह क्यों नहीं आया होगा कि दूसरों की सहायता से पहले मैडल जीतना आवश्यक है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

(ग) आपने भी कभी-न-कभी किसी की सहायता अवश्य की होगी, अपना अनुभव लिखिए।

(घ) आपके विद्यालय में कौन-कौन से खेल खेलने की सुविधा है? आप उनमें से कौन-कौन से खेल खेलना पसंद करते हैं?

खोजबीन

शीतल देवी, हरविंदर सिंह, दीपा मलिक आदि कुछ नाम जो पैरालिंपिक से जुड़े हैं। इनके या अन्य किसी खिलाड़ी के विषय में इंटरनेट से जानकारी प्राप्त कीजिए और अपने साथियों के साथ कक्षा में साझा कीजिए।

सृजनात्मकता की ओर

(क) उपर्युक्त घटना मित्रता-समावेशन का एक अनूठा उदाहरण है। आपने भी मित्रता का कोई ऐसा अन्य उदाहरण पढ़ा, सुना या अनुभव किया होगा। उसे अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) यदि आपको पदक जीतने वाले दल से साक्षात्कार का अवसर मिले, तो आपके क्या-क्या प्रश्न होंगे? सूची बनाइए।

शब्द पहेली

आइए, अब एक शब्द पहेली खेलते हैं। देखते हैं कौन इस वर्ग पहेली को सबसे पहले पूरा करता है। नीचे दिए गए संकेतों के आधार पर वर्ग पहेली को पूरा कीजिए—

1			2	■	3
	■	■	4	5	
6	7	8	■		
■	9				■
10	■		■	11	12
13			■	14	

ऊपर से नीचे	बाएँ से दाएँ
1. राक्षस का समानार्थी	1. एक फल का नाम
2. किवाड़/कीमत	4. पैसा
3. सामर्थ्य	6. चाँदी
5. लोककला/विशेष छपाई/पारंपरिक छपाई	9. मनुष्यों में श्रेष्ठ
7. लोग	11. मृत्यु/मौत
8. तुरंत तैयार किया हुआ। ताजगी और तरावट वाला	13. बेटी/पुत्री
10. पत्ता/दल	14. रिवाज
12. बुरी आदत	

3. डाँडी या गोथा

यह भील-भिलाला बच्चों का खेल है। 'डाँडी' और 'गोथा' शब्द का अर्थ एक ही है— खेलने की हाथ-लकड़ी। देखा जाए तो यह खेल काफी कुछ हॉकी जैसा है। अंतर बस इतना है कि हॉकी में गोल करने के लिए गोलपोस्ट होते हैं, जबकि इस खेल में ऐसा कोई निर्धारण नहीं है। दूसरा अंतर यह है कि भील-भिलाला बच्चों की यह गेंद, हॉकी की अपेक्षा एकदम साधारण होती है। यह बाँस की बनी होती है।

खेल सामग्री

1. बाँस के गुट्टे की गेंद जिसे 'दुईत' कहते हैं।
2. 'गोथा' यानी अंग्रेजी के 'L' अक्षर की तरह नीचे से मुड़ी हुई बाँस की डंडियाँ।
3. राख से खेल के मैदान में सीमांकन करना और घेरे के भीतर एक छोटा वृत्त बनाना।

कैसे खेलें

1. वैसे तो इसे चाहे जितने खिलाड़ी खेल सकते हैं, मगर दोनों दलों में कम-से-कम दो-दो खिलाड़ी हों।
2. टॉस करना। टॉस जीतने वाला दल खेल प्रारंभ करेगा।

3. गेंद को छोटे घेरे या वृत्त में रखना। हमला करने वाले दल के खिलाड़ी खेल प्रारंभ होते ही गेंद को पीटते हुए बचाव दल के दायरे में दूर तक ले जाना चाहते हैं।
4. दोनों दलों के एक-एक खिलाड़ी अपनी-अपनी तरफ की 'डी' में खड़े रहते हैं। वे प्रयास करते हैं कि गेंद रेखा पार न करे।
5. खिलाड़ी डाँडी या गोथा के दोनों ओर से खेल सकते हैं. जबकि ऐसी सुविधा हॉकी के खेल में नहीं है।
6. बाकी सारा खेल हॉकी के खेल के समान होता है। प्रश्न उठता है कि इस खेलस में गोलपोस्ट नहीं होते यानी गोल करने का मामला नहीं बनता, तो हार-जीत का निर्णय कैसे किया जाता है?

   उत्तर यह है कि जो दल गेंद को अधिक-से-अधिक बार विरोधी के पाले में ढकेलता है, वही बलवान है और इसलिए विजयी भी।
7. खेल के दो विशेष नियम हैं। पहला, गेंद शरीर के किसी भी अंग को न छूए और न रोके। दूसरा, गेंद को हवाई शॉट न मारना और न उसे हवा में शॉट खेलकर साथी खिलाड़ी को पास देना। बाकी लकड़ी से आप गेंद को रोक सकते हैं या हिट कर सकते हैं। आगे जैसा कि बता चुके हैं, जो दल बीच की रेखा को पार करके विरोधी दल के क्षेत्र में अधिक से अधिक दबाव या प्रवेश बनाए रखता है, वह विजयी होता है।

   विशेष— यह खेल होली का त्योहार आने के कुछ दिन पहले से खेला जाता है। अंत में जिस दिन होलिका जलाई जाती है, उस दिन ये दुइत और गोथे (गेंद और डंडे) आग में डाल दिए जाते हैं।

पाठ से

आइए, अब हम इस पाठ पर विस्तार से चर्चा करें। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. 'डाँडी या गोथा' खेल की गेंद है—
   - बाँस गुट्टे की
   - दुईत की
   - पत्थर की
   - लकड़ी की
2. डाँडी या गोथा खेल की टीम में खिलाड़ी होते हैं—
   - दो
   - ग्यारह
   - दो या अधिक
   - नौ
3. गोथा खेल के नियमों के आधार पर सही विकल्प चुनिए—
   - गेंद का शरीर से न छूना।
   - गेंद को हवा में उछालकर शॉट न मारना।
   - होली और दीवाली के पहले खेला जाता है।
   - इसमें भी हॉकी की तरह गोलपोस्ट नहीं होता।

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

जल्दी-जल्दी बताओ तो जानें

(क) भील-भिलाला क्या है?

(ख) गोथा किसे कहते हैं?

(ग) खेल का आरंभ कौन करता है?

मिलकर करें मिलान

नीचे दिए गए स्तंभ में खेल व खिलाड़ियों की संख्या दी गई है। खेल की उपयुक्त संख्या के साथ रेखा खींचकर सही मिलान कीजिए—

खेल	संख्या
क्रिकेट	6
फुटबाल	7
वॉलीबाल	11
हॉकी	9
कबड्डी	11
खो-खो	11

सोच-विचार के लिए

पाठ को एक बार फिर से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) डाँडी या गोथा खेल गिल्ली-डंडे से अधिक हॉकी जैसा है। कैसे?

(ख) डाँडी या गोथा खेल जीतने के लिए खिलाड़ियों को किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

(ग) आप अपने पसंदीदा किसी स्थानीय खेल को इसी पाठ की लेखन शैली में लिखिए।

सृजनात्मकता की ओर

कल्पना कीजिए कि आपके विद्यालय में डाँडी या गोथा खेला जा रहा है। दोनों टीमों को काल्पनिक नाम देकर अपनी कक्षा में उसका 'आँखों देखा हाल' (कमेंट्री) प्रस्तुत कीजिए।

अनुमान या कल्पना से

नीचे कुछ खेल के मैदानों के चित्र दिए गए हैं। चित्र को देखकर पता कीजिए कि ये किस खेल से सबंधित हैं? दिए गए रिक्त स्थानों में उनके नाम लिखिए—

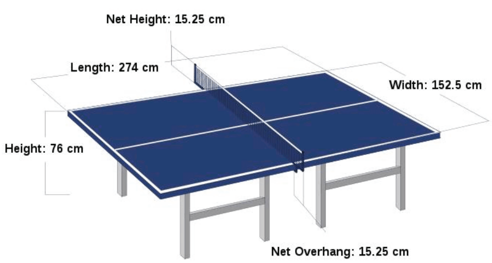

....

....

....

खोजबीन

नीचे कुछ स्थानीय खेलों के चित्र दिए गए हैं, उन्हें देखकर पता लगाएँ कि ये कौन-कौन से खेल हैं? उनके नीचे उनका नाम भी लिखिए—

(जैसे— सतौलिया/पिट्ठू, छुप्पन-छुपाई, स्टापू, गिट्टे)

....

....

....

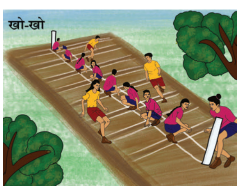

....

....

....

शब्दों की बात

पाठ में आए अग्रलिखित शब्दों— दायरा, निर्धारण, सीमांकन के अर्थ जानने हों तो हम क्या करेंगे? किसी से पूछ सकते हैं या शब्दकोश की सहायता ले सकते हैं। शब्दकोश में शब्दों के अनेक समानार्थी भी दिए जाते हैं। आप प्रसंग या संदर्भ के अनुकूल शब्द का चयन कर सकते हैं। शब्दकोश आपको सही अर्थ ही नहीं अपितु सही वर्तनी भी सिखाता है।

हिंदी का वर्ण क्रम— अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह

शब्द के अर्थ देने से पहले मूल शब्द के बाद कोष्ठक में एक संकेताक्षर दिया जाता है। इन संकेतों से शब्दों की भाषा और व्याकरण संबंधी जानकारी भी मिलती है। संकेताक्षर सूची प्रायः शब्दकोश के प्रारंभ में होती है।

(क) नीचे दी गई शब्द-सीढ़ी को समूह में पूरा कीजिए। सभी रिक्त स्थान भरिए। इसके लिए आप शब्दकोश की सहायता भी ले सकते हैं।

शब्द-सीढ़ी

ख
-
त - - र
-
- र - ज
-
- ल -
-
की
न म - र
-
ई - र
-
-
री - रि - -
वा
- के -
शां
- स क
-
री -
ल
- ल -
-
-
गि
-

(ख) इस शब्द सीढ़ी को ऊपर और नीचे बढ़ाइए, देखें कि किस समूह की कितनी लंबी बनती है?

4. विज्ञापन लेखन

दिए गए विज्ञापन को ध्यानपूर्वक पढ़िए, समझिए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
(अध्यापक चाहें तो इनके उत्तरों पर समूह में चर्चा करवा सकते हैं)

पाठ से

आइए, अब हम इस पाठ पर विस्तार से चर्चा करें। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) नीचे कुछ स्थितियाँ दी गई हैं। निम्नलिखित प्रश्नों का सबसे सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. एक दिन अचानक आपके पिताजी के पास फोन आता है— "हम राजधानी पावर लिमिटेड से बात कर रहे हैं। आपका सी.ए. नंबर बंद हो गया है, इसे अपडेट करने की आवश्यकता है अन्यथा आपकी बिजली आपूर्ति बंद कर दी जाएगी। सी.ए नंबर को ओ.टी.पी. ('वन टाइम पासवर्ड' या एक बार उपयोग किया जाने वाला गुप्त कोड) के माध्यम से अपडेट करना होगा।" इस स्थिति में आप क्या करेंगे?
   - ओ.टी.पी. दे देंगे।
   - cybercrime.gov.in पर तुरंत रिपोर्ट करेंगे।
   - कुछ कार्यवाही नहीं करेंगे।
   - उसकी बातों में आ जाएंगे।
2. आपके पास किसी अनजान मोबाइल नंबर से फोन आता है— "आपका महत्वपूर्ण पार्सल आया है इस हेतु आपके रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर पर एक कोड आया होगा। उसे अपडेट कीजिए, तभी आपका पार्सल आप तक पहुँच पाएगा।" ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे?
   - पार्सल के बारे में पता करेंगे।
   - 1930 नंबर पर कॉल करेंगे।
   - तुरंत कोड अपडेट करेंगे।
   - घबराकर निर्णय ले लेंगे।
3. आपके पास एक फोन आता है— "आपके किसी प्रियजन के साथ कोई दुर्घटना घट गई है और वह अस्पताल में है। फोन करने वाला व्यक्ति यह भी कहता है कि आप शीघ्र ही अस्पताल के इस नंबर पर पैसा भेजें ताकि इलाज शुरू हो जाए।" ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे?
   - प्रियजन को फोन कर असलियत पता लगाएँगे।
   - घबराकर तुरंत उस नंबर पर पैसे भेज देंगे।

- घर में बताए बिना उस पते पर रवाना हो जाएँगे।
- हड़बड़ाकर रोने लगेंगे और कोई गलत निर्णय ले लेंगे।

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

जल्दी-जल्दी बताओ तो जानें

(क) प्रस्तुत विज्ञापन किनके लिए और किसके द्वारा दिया गया है?

(ख) आपको किन-किन साइबर अपराधों के बारे में पता है? उनकी सूची बनाइए। इन अपराधों से बचाव के लिए किस-किस की सहायता ली जा सकती है?

(ग) अपने समूह में इन शब्दों पर बातचीत कीजिए— 'डिजिटल अरेस्ट', 'सीमा शुल्क अधिकारी' (कस्टम ऑफिसर), फ्रीज़ या ब्लॉक करना, 'साइबर स्कैम' आदि।

(घ) अपने-अपने समूह में इस विज्ञापन पर आधारित किसी एक परिस्थिति का संवाद लिखिए और उसका अन्य साथियों के समक्ष मंचन कीजिए।

सृजन

विश्व में पहली बार खो-खो के वर्ल्ड कप का आयोजन किया जा रहा है। जिसकी मेजबानी भारत कर रहा है। यह हमारे लिए गर्व की बात है। इसके प्रचार-प्रसार के लिए एक लिखित विज्ञापन तैयार कीजिए।

5. नाइट पैरट

हमारा पर्यावरण

नाइट पैरट, जिसे दुनिया का सबसे दुर्लभ और रहस्यमय पक्षी माना जाता है, अपनी अनोखी जीवनशैली के कारण वैज्ञानिकों के लिए हमेशा आकर्षण का केंद्र रहा है। यह पक्षी ऑस्ट्रेलिया के रेगिस्तानी इलाकों में पाया जाता है और केवल रात में सक्रिय रहता है। पहली बार इसे 19वीं सदी में देखा गया था, लेकिन इसके बाद लगभग एक सदी तक यह विलुप्त रहा। 2013 में इसकी दुबारा खोज ने वैज्ञानिक समुदाय को चौंका दिया। अनुमान है कि दुनिया में इनकी संख्या 40 से 200 तक हो सकती है। इसकी हरी-पीली पंखों वाली छवि और धीमी आवाजें, जो रात में ही सुनाई देती हैं, इसे और भी रहस्यमय बनाती हैं। रेगिस्तान में रहने की इनकी अद्भुत क्षमता है। इनको बचाने का प्रयास चल रहा है।

(6/12/2024)
(समाचार पत्र से)

ऊपर दी गई 'नाइट पैरट' की जानकारी के आधार पर अन्य पक्षियों या जीव-जंतुओं की जानकारी इंटरनेट से खोजकर बॉक्स में लिखिए और कक्षा के बुलेटिन बोर्ड पर लगाइए।
(विद्यार्थी अपने क्षेत्र विशेष में विलुप्त होती प्रजातियों के बारे में लिख सकते हैं।)

....

....

....

....

....

....

....

....

....

पढ़ने के लिए

क्यों नहीं मैं भी बनती लेखिका?

आज सिव उदास थी। क्यों उदास थी? वह जान पा रही थी। अकेले बैठ कर सोचे तो शायद जान पाए। उसे घर के सबसे छोटे कमरे की पिछली खिड़की भाती थी। जब वह उदास होती उसी खिड़की के पास जाकर बैठ जाती थी। उस खिड़की से मीठी-मीठी धूप आती। बाहर फैला आँगन दिखता। वसंत में खिले फूल दिखते। उन पर रंग-बिरंगी तितलियाँ मँडरातीं।

तभी साइकल की घंटी की आवाज आई। डाकिया डाक लाया था। वह हमेशा पिछले आँगन के छोटे गेट के ऊपर से डाक थमाता था। लकड़ी का गेट हरे रंग का था। सिव ने पिता के साथ मिल कर उसे रंगा था। सिव को डाक लेना बहुत अच्छा लगता था। चिट्ठी होगी या कोई पत्रिका! भागती हुई वह डाकिए के पास गई और पार्सल ले आई। सबसे पहले बड़े ध्यान से टिकट उतारी। उसे अपनी कॉपी में चिपका लिया। उसका टिकट-संग्रह उसके स्कूल और मोहल्ले में सबसे बड़ा था। उसे ले वह बहुत इठलाती थी। सिव ने लिफाफा खोला। कोई पत्रिका है। माँ ने मँगवाई होगी!

उसके पन्ने पलटती हुई वह खिड़की के पास बैठ गई। तभी उसे एक चित्र दिखा— किसी लेखिका के लिखने का कमरा, करीने से सजी किताबें, पुराना टाइप-राइटर, महँगा फाउंटेन-पेन, कुछ कागज, कुर्सी, सोफा, लकड़ी का टेबल लैंप, कई चित्र, बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ। उसके सामने सज-धज के बैठी एक लेखिका। इठलाती हुई। ऐसे कमरे में बैठ कर कोई भी रचेगा तो अलग ही संसार होगा और ये मेरा कमरा! बस छोटी-सी एक खिड़की। सिव फिर उदास हो गई। वह उसी कमरे के बारे में सोचती रहती। हमेशा गुमसुम रहती। माँ-पिता फिकर करते, "क्या सोचती रहती है?" जब सिव ने बताया तो हँस पड़े बोले, "इस कमरे के लायक बनने के लिए तो लिखना पड़ेगा। बहुत मेहनत लगती है।"

उस दिन से सिव ने ठान लिया कि बनूँगी तो लेखिका ही। उसने ज़िद करके अपना कमरा सजाया। सुंदर टेबिल और कुर्सी लाई। हलके नीले रंग के परदे बनवाए। छोटी-सी किताबों की अलमारी गढ़वाई। स्याही वाला पेन लिया। सुंदर सफेद कागज मेज पर रखे और लिखने बैठ गई। सब कुछ ठीक था। खिड़की से नर्म धूप आ रही थी। फूल खिले हुए थे। तितलियाँ नाच रही थीं, पर मुसीबत यह कि अब वह लिखे तो क्या? लिखने के लिए उसके पास कुछ भी नहीं था? भागते हुए वह माँ के पास गयी और बोली, "माँ अब लिखूँ क्या?" सिव का छोटा भाई पालने में था।

माँ गाते हुए झूला झुला रही थीं। भाई सो रहा था। माँ उसे टरकाते हुए बोली, "जो रोज देखती, सुनती और सोचती हो वही लिख दो।"

सिव मुँह लटका कर वापस अपने कमरे में आ गई। यह भी कोई लिखना हुआ भला? सुबह उठे-नहाए-स्कूल गए-होमवर्क किया- खाया-पिया...। सिव खिड़की के पास बैठ कर अपने सामने पड़े सफेद कागज को टकटकी बाँधे देखने लगी। कागज उसे घूरता-चिढ़ाता हुआ-सा लगा। तभी साइकिल की घंटी की आवाज आई। डाकिया आया होगा, सोचती हुई सिव बाहर भागी। बाहर कोई नहीं था। माँ कपड़े सुखा रही थीं। फिर खाना बनाएँगी। कल सुबह स्कूल पढ़ाने जाएँगी। वापस आकर हम सबके लिए खाना बनाएँगी। माँ हर रोज़ कितना काम करती हैं।

सिव ने झट-से कागज पर लिखा—

माँ का चेहरा कितना चमकता है। उनके हाथ का खाना कितना स्वादिष्ट है। उनकी आँखें कितनी बड़ी हैं। जब कपड़े सुखाती हुई वे चादर के पीछे गईं तो उनकी परछाई की नाक कितनी लंबी थी। माँ की परछाई उनका हर कहना मान रही थी। जो माँ करतीं परछाई बिलकुल वैसा ही करती। कितना मजा आए अगर माँ की परछाई माँ का कहना मानना बंद कर दे। जो माँ करे परछाई उसका बिलकुल उलट करे। सिव को जोर की हँसी आ गई। उसने यह हँसी भी कागज पर दर्ज कर दी।

तभी फिर घंटी बजी। डाकिया साइकिल पर बैठा उनके घर के आसपास चक्कर काट रहा था। परेशान दिख रहा था। शायद पते का कोई घर नहीं मिल रहा था। तभी दरवाजे की घंटी बजी। पिता दफ्तर से वापस आए थे। पिता के कान कितने छोटे हैं और पैर कितने बड़े हैं। उनका जूता सिव ने अपने जूते के पास रखा। उसे बड़ी हँसी आई। यह हँसी भी उसने कागज में दर्ज कर ली। पिताजी मुँह-हाथ धो कर खाना खाते थे। माँ अब भी कपड़े सुखा रही थीं। पिता ने खाना खतम करके सबके लिए परोस दिया था। छोटा भाई पालने में लेटा यह सब देख रहा था। अचानक उसने चिल्लाना शुरू कर दिया। उसकी आँखें बंद और मुँह खुला था। माँ भागते हुए आई पिता भी भागते हुए आए दोनों अलग-अलग दरवाजे से आए और आपस में टकरा गये वे हँसने लगे। भाई पालने में रो रहा है। कैसा विचित्र दृश्य है। सिव ने यह भी अपने कागज में दर्ज कर लिया। कागज भरते जा रहे थे। और बड़े खुश थे।

बाहर डाकिया घंटी बजाता हुआ अभी भी घर ढूँढ़ रहा था। आँगन में तितलियाँ उड़ रही थीं। सिव ने सोचा क्यों नहीं वह भी उड़ सकती? डाकिया अचानक हरे दरवाजे पर रुका और बोला, "ओहो, अरे बेटी तुम्हारा नाम क्या है?" सिव बोली, "सिव"

"धत तेरे की! तुम्हारा ही तो पार्सल आया है। मैं भी कितना मूरख हूँ। हमेशा तुम्हारे पिता के नाम के पार्सल आते थे। तो भरमा गया। इस छोटी-सी लड़की का इतना बड़ा पार्सल।" डाकिया जोर-जोर से हँसने लगा था। सिव को लगा कि काश वो तितलियों की तरह उड़ कर डाकिए के पास जा सकती। तभी उसे सब कुछ हलका-हलका लगने लगा। जमीन पर रखा पालना और उसमें बैठा भैया दोनों छोटे होने लगे। भैया अपना रोना भूल उसकी ओर हैरानी से देख रहा था। वो हँस रहा था। वो उड़ते हुए डाकिए के पास गई और अपना पार्सल ले लिया।

उसने वह सब जो सफेद कागजों पर लिखा था वही किताब छप कर आई थी। उसमें कई चित्र थे। एक चित्र में वह बिलकुल इसी तरह तितलियों के साथ उड़ रही थी। किताब उसकी टेबिल पर रखी थी। उसका कमरा हूबहू उस लेखिका के कमरे जैसा था। फोटो में सिव अपनी किताबों की अलमारी के सामने रखे दीवान पर इठलाते हुए बैठी थी। इस फोटो को दूर देश की एक छोटी लड़की ने देखा और सोचा, "क्यों नहीं मैं भी बनती एक लेखिका?"

— *अमित दत्ता*

साझी समझ

(क) इस कहानी का मंचन करने के लिए संवाद लिखिए।

(ख) आपके विचार से कहानीकार बनने के लिए क्या-क्या तैयारी करनी होगी, उसकी सूची बनाइए।

(ग) कल्पना कीजिए कि सिव अब प्रसिद्ध लेखिका बन चुकी हैं। आपको उनसे साक्षात्कार करने जाना है उनसे आप क्या-क्या प्रश्न पूछना चाहेंगे, उन सभी प्रश्नों को लिखिए।

(घ) अपने मित्र को इस रचना की जानकारी देते हुए पत्र या ई-मेल लिखिए और बताइए कि कैसे इस रचना ने कहानी की पुस्तक पढ़ने के लिए प्रेरित किया?

पहेलियों के उत्तर

पाठ 1	आओ बच्चो, तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की	आज की पहेली	जलज, पतंग, अंधेरा, गुलाबजामुन, मानचित्र
पाठ 2	एक दौड़ ऐसी भी	शब्द पहेली	**ऊपर से नीचे**— 1. असुर, 2. दर, 3. क्षमता, 5. कलमकारी, 7. जन, 8. तरोताजा, 10. पात, 12. लत बाएँ से दाएँ— 1. अमरुद, 4. रकम, 6. रजत, 9. नरोत्तम, 11. काल, 13. तनुजा, 14. रीत
पाठ 3	डाँडी या गोथा	शब्द-सीढ़ी	**क्रमश:**— खपत, तलवार, रजत, तरबूज, जलज, जलन, नमकीन, नमस्कार, रजाई, ईश्वर, रसभरी, रीत-रिवाज, जवारा, राकेश, शशांक, कसक, कस्तूरी, रीछ, छलनी, नीलम, मलयगिरि

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING